Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 12 | SPECIAL ISSUE DECEMBER-2024

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मकपरिपक्वता का अध्ययन

कुमार सुमन शोधार्थी: शिक्षा एवं शोध संस्थानमानविकीय शाखा,मंगलायतनविश्वविद्यालय, अलीगढ़ (उ.प्र.).

ABSTRACT:

प्रस्तुत अध्ययन में किशोर छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता को जानने का प्रयास किया गया है। अध्ययन में पाया गया है कि छात्रों में संवेगात्मक परिपक्वता के विकास में कई कारकों का प्रभाव पड़ता है। जैसे- परिवार, मित्र, विद्यालय, सामाजिक परिवेश, धार्मिक रीति-रिवाज आदि। वर्तमान बदलती परिस्थितियों के कारण आज छात्र-छात्राओं में संवेगात्मक परिपक्वता का अभाव पाया जाता है जिसके कारण उनमें परिवार एवं समाज के प्रति प्रेम एवं सहयोग का अभाव पाया जाता है। अतः विद्यालय, परिवार एवं समाज में छात्र-छात्राओं को ऐसा शैक्षिक एवं सामाजिक वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए कि उनमें संवेगात्मक परिपक्वता का उचित विकास हो सके जिससे इन विद्यार्थियों में अपराध प्रवृति का जन्म ना हो और वे अपना योगदान समाज एवं देश के विकास में दे सकें।

KEYWORDS:

-

प्रस्तावना:

शिक्षा मानव जीवन में चलने वाली एक सतत् प्रक्रिया जो जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है। शिक्षा मानव का निर्माण करती है और चरित्र को उत्कृष्ट बनाकर मानव को संस्कारित करती है। यह मानव जीवन का मूल आधार है इसके द्वारा मूल प्रवृतियों तथा जन्मजात शक्तियों का विकास होता है और उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जा सकता है। उसे सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जा सकता है। जन्म के पश्चात् जब बालक कुछ बड़ा होता है तो उसके सर्वांगीण विकास हेतु सामाजिक आचरण की विधियाँ सिखाई जाती है, और वह निश्चित आयु के बाद विद्यालय जाना शुरू करता है। विद्यालय में उसकी शिक्षा सुनियोजित एवं औपचारिक ढ़ग से चलती है। विद्यालय के साथ-साथ बालक को परिवार तथा अपने पास-पड़ोस से भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

शिक्षा का महत्व

शिक्षा का मुख्य कार्य व उद्देश्य बालक में अन्तर्निहित गुणों का विकास करना होता है। जिस प्रकार एक बीज में पेड़ व पौधा बनने के सभी गुण विद्यमान रहते हैं, किन्तु यह विशेषताएँ तभी मूर्त रूप लेती है, जब बीज को अंकुरित होने के लिए अनुकूल वातावरण दिया जाता है। उसी प्रकार एक बालक के अन्दर जन्म से ही विशेषताएँ व गुण विद्यमान होते हैं, परन्तु इन विशेषताओं एवं गुणों का विकास तभी हो सकता है, जब बालक को अनुकूल अध्ययन की आदत एवं सामाजिक वातावरण प्राप्त हो।

संवेग-

वुडवर्थ के शब्दों में- "संवेग व्यक्ति के गति में अथवा आवेश में आने की स्थिति है।"

किसी भी देश का भविष्य उस देश के बालकों पर निर्भर होता है। हमारे देश में शिक्षा का उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास कर उन्हें सुयोग्य नागरिक बनाना है। ये सुयोग्य नागरिक तभी बन पायेंगे जब इनमें चिंतन, तर्क, संवेगात्मक परिपक्वता जैसे गुणों का विकास हो पायेगा। बालकों में संवेग का विकसित होना बहुत ही जरूरी है क्योंकि इसके बिना मनुष्य मशीन के समान है। आधुनिक प्रतिस्पर्धात्मक युग में मनुष्य का जीवन काफी तनाव पूर्ण हो गया है। संवेगात्मक परिपक्वता के अभाव में मनुष्य क्रोधवश अपनी जीवन लीला को भी समाप्त कर लेता है। आये दिन समाचार-पत्रों, रेडियो, टी.वी में हम लोग ऐसी घटनाएँ पढ़ते व सुनते रहते हैं।

संवेगात्मक परिपक्वता: संवेगात्मक परिपक्वता का तात्पर्य व्यक्ति में स्वयं सामना करने से है, तथा संवेगों पर नियंत्रण रखकर उनका अनुकूल अवसरों पर सुनियोजित प्रकार से प्रकटीकरण है। अतः संवेगों का उचित विकास करना अति आवश्यक है, इसके अभाव में चरित्र का निर्माण नहीं हो सकता। संवेगों के प्रशिक्षण का उद्देश्य व्यक्ति में संवेगात्मक प्रौढ़ता का विकास करना है। संवेगात्मक प्रौढ़ता की विपरीत स्थिति है संवेगात्मक अपरिपक्वता, यह निम्नलिखित व्यवहार प्रतिमानों में दिखाई पड़ती है। जैसे विदूषक के द्वारा ध्यान आकर्षित करना, मूर्खतापूर्ण तर्क देना, प्रक्षेपण (अपने दोषों को दूसरों पर लादना) अत्यधिक दिवास्वप्न देखना,

संवेगों की अवांछनीय अभिव्यक्ति आदि गुण संवेगात्मक अपरिपक्वता के ही उदाहरण है।

पी.टी. यंग के अनुसार, "संवेग सम्पूर्ण जीवन का वह मूलतः मनोवैज्ञानिक तीव्र उद्गम है जिसमें चेतना अनुभूति व्यवहार एवं अन्तरावयय की क्रियाएँ सन्निहित रहती है।"

डब्ल्यू मैक्डूगल के अनुसार, "संवेग मूल प्रवृत्ति का मुख्य तथा आवश्यक परिवर्तनीय अंग है।" संवेग कभी भी उत्पन्न हो सकते है, ये शरीर को उत्तेजित करते हैं, शरीर मे बाधायें परिवर्तन करते है संवेगों का बड़ा महत्व है, ये जन्मजात नहीं होते है।

संवेगात्मक परिपक्वता का महत्व

संवेगात्मक रूप से परिपक्व व्यक्ति सामान्यतः स्वस्थ जीवन जीता है और अपने परिवार, मित्रों, सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बनाकर रखता है। संवेगात्मक परिपक्व व्यक्ति अपनी चिंता, मन, तनाव को नियंत्रित कर लेते हैं तथा अपनी भावनाओं को सही तरीके से व्यक्त करते हैं।

संवेगात्मक परिपक्वता विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ाता है और उन्हें लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करता है। संवेगात्मक रूप से परिपक्व व्यक्ति समस्याओं को समझने और उनका समाधान करने में सक्षम होते हैं। इनमें सकारात्मक आदतों का विकास होता है जिससे जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम हो पाते हैं। अतः विद्यार्थियों में संवेगात्मक परिपक्वता का उचित तरीके से विकसित होना बहुत जरूरी है। किशोरावस्था को मनुष्य के जीवन का तूफान और तनाव की अवस्था कहा गया है। 14 से 18 वर्ष की अवस्था में किशोर अपने आने वाले जीवन के बारे में काफी उत्साहित एवं चिंतित रहते हैं।

आधुनिक समय में किशोर अपनी पढ़ाई, परीक्षाफल तथा कैरियर को लेकर काफी जागरूक रहते हैं। इनके ऊपर माता-पिता तथा विद्यालय का दबाव भी रहता है। इस उम्र में संवेगों की अभिव्यक्ति अति तीव्र होती है। किशोर के लिए यह वो समय है जिसमें वे न तो पूर्ण परिपक्व होते हैं न ही बालक होते हैं। इस अवस्था में किशोरों में संवेगों को नियंत्रित करने की क्षमता विकसित हो रही होती है। प्रायः ऐसा देखा गया है कि जो किशोर संवेगात्मक रूप से परिपक्व होते हैं वे जीवन में ज्यादा सफल होते हैं।

संबन्धित साहित्य का अध्ययन -

मेनका कौल और खजूरिया (2022) ने "सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके स्ट्रीम (Stream) के संबंध में प्रभाव" पर एक अध्ययन किया। उपकरण के रुप में डॉ. यशवीर सिंह और डॉ. रमेश भार्गव के (1984) के संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का उपयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि सीनियर सेकेंडरी स्कूल के विज्ञान एवं कला संकाय के छात्र तथा छात्राओं के बीच संवेगात्मक परिपक्वता में महत्वपूर्ण अन्तर हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि सीनियर सेकेंडरी स्कूल के विज्ञान एवं कला के छात्रों के बीच संवेगात्मक परिपक्वता में महत्वपूर्ण अन्तर है।

बेनर, इप्राइल डी.किम. सूयांग (2019) ने अपने शोध अध्ययन का उद्देश्य डिसक्रिमिनेशन का सामाजिक गतिशीलता और किशोरावस्था पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। इसके लिए लेखक ने आॅटोरेग्रेसिव और क्रास लैग्ड विधि का उपयोग किया, लेखन ने अपने अध्ययन में पाया कि डिसक्रिमिनेशन के लक्षण, एलिनेशन, विद्यालया में व्यस्तता किशोरावस्था में कम रहती है किन्तु बाद में अनुभवों से सामाजिक गतिशीलता बढ़ती है। इस परीक्षण में उन्होने पाया कि मध्य किशोरारवस्था में अस्थायी विकास होता है। जहाँ पूर्व का डिसक्रिमिनेशन शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए बहुत उत्तरदायी होता है। अन्त में उन्होने किशोरावस्था व डिसक्रिमिनेशन के मध्य सम्बन्ध देखा और पाया कि किशोरावस्था अनुभव का प्रभाव डिसक्रिमिनेशन से अधिक सामाजिक गतिशीलता पर पड़ता है।

जॉनसन वेनेसा के केर सेन्ट्रा, गन्स, सुसेनई. बर्चवेल, डेवोरह (2018) ने अपने अध्ययन में विद्यालय में समायोजन का परीक्षण किया। उन्होंने 41 विद्यार्थियो पर प्रश्नावली के माध्यम से जिसमें चिन्ता के लक्षण और तनाव से सम्बन्धित प्रश्न थे, विद्यालय प्रारम्भ होने की शुरूआत में तथा अन्त में परीक्षण किया। प्रारम्भ में छात्रों को बहुत कठिनाई हुई किन्तु अन्त में छात्रों ने बहुत अच्छी तरह से इन प्रश्नों को हल कर लिया।

अनिल मिलि (2015) ने असम के लखीमपुर जिले के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन किया। प्रतिदर्श में 500 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया। जो कक्षा 10वीं के छात्र थे जिसमें 250 छात्र एवं 250 छात्रायें सम्मिलित थीं। जो लखीमपुर जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों से सम्बन्धित थे। जिसमें 20 सरकारी व गैर सरकारी स्कूलांे के बच्चे थे। इसके लिए यशवीर सिंह और महेश भार्गव (1990) सांवेगिक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया। अध्ययन रिपोर्ट में पाया गया कि संवेगात्मक परिपक्वता का सरकारी व गैर सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों में कोई अन्तर नहीं था।

सिंह, शैलेन्द्र (2013) ने बौद्धिक स्तर तथा संवेगात्मक परिपक्वता के मापन के लिए अध्ययन किया तथा इस अध्ययन में उन्होंने 1028 आई ग्रेड के छात्रों पर जांच की। बुद्धि मापनी तथा संवेगात्मक परिपक्वता स्केल द्वारा उनकी बुद्धि तथा संवेगात्मक परिपक्वता का मापन के उपरान्त यह परिणाम निकाला कि बौद्धिक क्षमता संवेगात्मक परिपक्वता से सम्बन्धित थी, उच्च बौद्धिक स्तर वाले विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से भी परिपक्व थे।

वर्गस तथा अगुड़िया (2012) ने एक अध्ययन किया जो मदिरापान करने

वाले अभिभावकों के विकासात्मक स्तर तथा संवेगात्मक परिपक्वता से सम्बन्धित था। इसके लिए इन्होंने बीस-बीस बच्चों के तीन समूह बनाये, जिससे बच्चों की आयु 6 से 10 वर्ष थी। उन्होने प्रथम समूह में उन बच्चों को लिया जिनके अभिभावक वर्ष भर मदिरापान करते थे। दूसरे समूह में उन बच्चों को लिया जिनके अभिभावक सप्ताह में एक दिन मदिरापान करते थे तथा तीसरे समूह में उन बच्चों को रखा जिनके अभिभावक मदिरापान नहीं करते थे। इन तीनों वर्गो के बच्चों पर संवेगात्मक परिपक्वता स्केल तथा बुद्धि तथा संवेगात्मक परिपक्वता के स्तर में सार्थक अन्तर था। जो अभिभावक मदिरापान नहीं करते थे उनके बच्चों का विकासात्मक स्तर संतुलित पाया गया तथा वे संवेगात्मक रूप से परिपक्व थे।

ग्रिगोराई मारिया (2012) ने पांच से सात वर्ष के बच्चों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया। इसके लिए उन्होने सात कारको वाली मापनी का प्रयोग किया जिसमें सूक्ष्म-ग्राही गुण, सवेगात्मक, अंतर्मुखी परोपकार आदि गुण सम्मिलित थे। प्राप्त पदों के परिणामों की जांच पांच बिन्दु स्कूल, जो कि सदैव से कभी नहीं तक प्रशासित थे, द्वारा की गई। परिणामों के प्राप्त होने के उपरान्त उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला की पाँच से सात वर्ष के बालको के संवेगों में परिपक्वता या स्थिरता नहीं पायी गयी।

सिंह, वीरमति शर्मा, शैलेन्द्र (2011) ने प्रबन्ध संस्थानों के छात्रों की सृजनात्मकता एवं संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया तथा इसमें उन्होंने पाया कि भावात्मक परिपक्वता का बालक के विकास पर काफी प्रभाव पड़ता है।

सिंह, सुनील प्रताप (2007) ने अपने अध्ययन में ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि ग्रामीण छात्र-छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता समान है तथा ग्रामीण छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता शहरी क्षेत्र के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता से अधिक है। इसका कारण ग्रामीण क्षेत्र में पारिवारिक एवं सामाजिक संरचना का मजबूत होना, बच्चों के साथ प्रेम, स्नेह तथा लगाव का अधिक होना है।

प्रस्तुत अध्ययन में गहन साहित्य की समीक्षा के पश्चात् यह अनुभव किया गया कि तेजी से बदलते हुए विश्व में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का विकास, व्यक्तिगत मूल्यों, सामाजिक संरचना, पारिवारिक परिवेश आदि में परिवर्तन होने के कारण किशोरों की मानसिकता में भी परिवर्तन होता जा रहा है। अध्ययन से यह पता चला है कि इस परिवर्तन का प्रभाव किशोरों के संवेगात्मक परिपक्वता पर भी पड़ता है। जिन छात्रों को अच्छा विद्यालय, शिक्षक, मित्र, पारिवारिक वातावरण, स्नेह, प्रेम, एवं शिक्षित माता-पिता आदि मिलते हैं, वे संवेगात्मक रूप से अधिक परिपक्व होते हैं और अपने जीवन में सफल होते हैं। ऐसे छात्र आगे जाकर समाज एवं देश के लिए उपयोगी सदस्य बन जाते हैं। अध्ययन में यह भी देखा गया कि उच्च बौद्धिक क्षमता वाले छात्र संवेगात्मक रूप से अधिक परिपक्व होते हैं जिसका प्रभाव बालक के विकास पर पर पड़ता है। बच्चों के विकास में उनके साथ सम्बन्ध प्राथमिता रखते हैं। माता-पिता, परिवार और दोस्तों के साथ मजबूत सम्बन्ध बच्चों के शारीरिक, भावात्मक, नैतिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन सम्बन्धों से ही बच्चे में आत्मविश्वास, सुरक्षा और सामाजिक कौशल विकसित होते हैं। संवेगों का सम्बन्ध भावात्मक पक्ष से होता है। संवेगात्मक परिपक्वता जीवन की चुनौतियों का सामना करके प्रतिकूल परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित करने में सहायक होती है। अतः भविष्य में देश को अच्छे नागरिक मिलें इसके लिए यह जरूरी है कि बालकों को सही मार्गदर्शन, उचित पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण दिया जाय।

निष्कर्ष एवं सुझाव

1. शिक्षकों को पाठ्यक्रम की शिक्षा देने के साथ-साथ विद्यार्थियों में संवेगात्मक परिपक्वता को भी विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

2. विद्यार्थियों को अपनी संवेगों को पहचानने, समझने तथा उसे नियंत्रित करने के तरीके सीखाने चाहिए।

3. विद्यार्थियों को यह सिखलाना चाहिए कि लोगों के साथ सहानुभूति रखने और जिम्मेदार व्यवहार करें।

4. संवेगों को नियंत्रित करने के लिए संवाद करने, गहरी साँस लेने, व्यायाम करने आदि की जानकारी विद्यार्थियों को देनी चाहिए।

REFERENCES

1. आहूजा, राम (2005): भारतीय समाज, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

2. ओड, डॉ. लक्ष्मीलाल के. (2008): शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

3. Best, J. W. (1963) : Research in Education, New Delhi; Prentice Hall of India Pvt. Ltd.

4. भटनागर, ए.वी., भटनागर मीनाक्षी (2007): मनोविज्ञान और शिक्षा के मापन एवं मूल्यांकन, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

5. चैबे, डॉ. सरयू प्रसाद (2009): आधुनिक शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

6. गुप्ता, एस.पी. (2008): आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

7. गुप्ता, एस.पी. (2009): उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

8. गुप्ता, एस.पी. (2008): व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।

9. कपिल, एच.के. (2009): अनुसंधान विधियाँ, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।

10. लाल, रमन बिहारी (2009): शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त,

11. पाल, मोहन, गुप्त (2007): शिक्षा मनोविज्ञान, न्यू कैलाश प्रकाशन।

12. पाठक, पी.डी. (2011): शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

13. प्रभु, पन्धारी नाथ एच0,: हिन्दू समाज की व्यवस्था, जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्युटर्स, नई दिल्ली।

14. राय, पारथ नाथ (2008): अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

15. सक्सेना, एन.आर. स्वरूप (2009): शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

16. शर्मा, आर.ए. (2009): शिक्षा अनुसंधान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

Journals :

1. योजना (मासिक पत्रिका)

2. कुरूक्षेत्र (मासिक पत्रिका)

3. Indian Education Review, A Research Journals, N.C.E.R.T., New Delhi.